B.A. Part III Pol. Sc. Unit 5 / Paper 6th

जॉन लॉक का राज्य संबंधी विचार

जॉन लॉक के राजनीतिक दर्शन में भी हॉब्स के राजनीतिक दर्शन की तरह प्राकृतिक अवस्था का चित्रण मिलता है। प्राकृतिक अवस्था का वर्णन करते हुए लॉक ने लिखा है, कि यह अवस्था थी जिसमें मनुष्य विधियों की सीमाओं में रहकर किसी की आज्ञा प्राप्त किए बिना, अथवा किसी की इच्छा पर निर्भर हुए बिना अपने कार्यों को करते तथा अपनी सम्पत्ति एवं शरीर को प्रयोग में लाते थे। राजनीतिक चिंतक "हरमन" के अनुसार लॉक की प्राकृतिक अवस्था वह पूर्ण स्वतंत्रता की अवस्था है जिसमें मनुष्य प्राकृतिक विधियों को मानते हुए कुछ भी करने को स्वतंत्र है। इस अवस्था में सभी जन्म से समान होते हैं तथा समान अधिकारों का उपभोग करते हैं। इस प्रकार लॉक द्वारा चित्रित मनुष्य की प्रकृति हॉब्स के चित्रण से मेल नहीं खाती हॉब्स ने इसे मनुष्यों के लिए निरन्तर संघर्ष और युद्ध की दशा कहा है, जब कि लॉक ने इसे निरन्तर युद्ध की अवस्था नहीं कहा है। प्रो० सेबाइन ने लॉक के Nature of State के संबंध में कहा है कि " लॉक की प्राकृतिक अवस्था शान्ति, सद्भावना, पारस्परिक सहयोग तथा सुरक्षा की अवस्था है।

हॉब्स की प्राकृतिक अवस्था तथा लॉक की प्राकृतिक अवस्था में अन्तर :— जिस प्रकार मनुष्य के संबंध में लॉक के विचार हॉब्स के विचार से मेल नहीं खाते, उसी प्रकार प्राकृतिक अवस्था के संबंध में भी लॉक के विचार हॉब्स के विचारों से भिन्न हैं।

(i) हॉब्स ने यह माना की प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य का जीवन एकांकी, निर्धन, घृणित पाशविक तथा अल्प था, परन्तु लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में व्यक्ति में शांति पूर्ण पारस्परिक सहयोग, विवेकपूर्ण, स्वतंत्र तथा कर्तव्यनिष्ठ थे।

(ii) हॉब्स के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में मनुष्यों के लिए निरन्तर संघर्ष और युद्ध की दशा थी जबकि लॉक के मत में प्राकृतिक अवस्था में व्याप्त शान्ति, सद्भावना, पारस्परिक सहयोग तथा

Scanned with CamScanner

सुरक्षा के साथ रहते थे।

(iii) हॉब्स ने प्राकृतिक अवस्था के मनुष्यों को एकांकी और पाशविक कहकर उनके जीवन के सामाजिक एवं राजनीतिक स्वरूपों को अस्वीकार किया है, परन्तु लॉक ने प्राकृतिक अवस्था के मनुष्यों को पारस्परिक सहयोग और विवेकपूर्ण सुरक्षा के साथ संबद्ध किया है, उसने मनुष्य के सामाजिक जीवन को स्वीकार किया है।

(iv) हॉब्स के प्राकृतिक अवस्था के मनुष्य प्राकृतिक विधियों का पालन नहीं करते, प्रत्येक मनुष्य अपनी स्वेच्छा से निर्देशित होकर अपनी सुरक्षा और शक्ति की वृद्धि करता है। दूसरी तरफ लॉक के प्राकृतिक अवस्था के मनुष्य प्राकृतिक विधियों का पालन करते है वे विधियों द्वारा लगायी गयी सीमा के अधीन अपनी स्वेच्छा और शक्ति को महत्व देते है। उनका जीवन अनुशासित रहता है, क्योंकि प्राकृतिक विधियाँ उनका पथ प्रदर्शन करती है। इस प्रकार हॉब्स के प्राकृतिक अवस्था के व्यक्ति केवल अधिकार का उपयोग करते है, जबकि लॉक की प्राकृतिक अवस्था के व्यक्ति अधिकार के साथ-साथ कर्तव्य को भी महत्वपूर्ण मानते है।

(v) प्राकृतिक विधियों के सम्बन्ध में हॉब्स तथा लॉक के दृष्टिकोण एक समान नहीं है। हॉब्स ने प्राकृतिक विधियों को नागरिक विधियों की नागरिक विधियों मापदण्ड नहीं माना। दूसरी तरफ लॉक ने प्राकृतिक विधियों को नागरिक विधियों का पूर्वगामी माना है। वह उन्हें एक दूसरे का पूरक माना है। वह उन्हें एक दूसरे का पूरक माना है। उसके अनुसार नागरिक विधियों में प्राकृतिक विधियों को ही प्रतिष्ठित करके व्यवस्था कायम की जाती है, प्राकृतिक विधियों और नागरिक विधियों में विरोध नहीं है।

(vi) हॉब्स तथा लॉक प्राकृतिक अवस्था के अधिकारों के संबंध में एक दूसरे से भिन्न मत रखते है। हॉब्स ने केवल जीवन रक्षा के अधिकार को प्राकृतिक अधिकार कहा जबकि लॉक ने जीवन स्वतंत्रता तथा संपत्ति के अधिकारों को प्राकृतिक माना है।

इस प्रकार हम देखते है कि हॉब्स की प्राकृतिक अवस्था एक अन्धकारपूर्ण अवस्था है, जिसे लॉक ने प्रकाशपूर्ण बनाने का प्रयास किया है।

Scanned with CamScanner

आलोचना :— राजनीतिक विचारक 'सेबाइन' ने कहा है कि लॉक की प्राकृतिक अवस्था का एक मात्र दोष यह है कि इसमें मजिस्ट्रेटों लिखित विधि और निश्चित दण्डों की कोई व्यवस्था नहीं है। चूँकि लॉक की प्राकृतिक अवस्था एक पूर्व राजनीतिक अवस्था थी। अतः इसमें मजिस्ट्रेटों लिखित नियमों, दण्डों की आशा करना अनुचित और निरर्थक है। लॉक ने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है कि उसकी प्राकृतिक अवस्था में तीन कठिनाईयाँ है, प्रथम, लोगों में प्राकृतिक विधियों में मतैक्य का अभाव, दूसरा, प्राकृतिक अवस्था में निष्पक्ष न्यायपालिका का अभाव तथा तीसरा, प्राकृतिक अवस्था में कोई कार्यपालिका नहीं होती, अतः प्राकृतिक नियमों को लागू होने में कठिनायी होती।

अतः हम कह सकते है कि जिसे प्रो० सेबाइन ने लॉक की प्राकृतिक अवस्था के संबंध में जिसे एक मात्र दोष कहा है, वास्तव में उसे दोष नहीं कहा जा सकता, क्योंकी संबंधित कठिनाइयाँ स्वयं लाक ने स्वीकार किया है। प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य अपने स्वत्व की जिस प्रकार भी हो रक्षा करता है। उसे अपनी चीज की रक्षा करने का अधिकार तथा दूसरे की चीज को सम्मान देने का कर्तव्य प्राप्त है। इस प्रकार मनुष्य का अधिकार प्राकृतिक अवस्था में भी उतना ही पूर्ण हो जाता है, जितना की किसी शासन के अन्तर्गत अतः लॉक के विचारों में दोष नहीं के बराबर है।

Scanned with CamScanner